CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitization by eGangotri.Funding:

हिन्दी १५२

६९

१३६९

समाज विकासमाला

ानुजाचार्य

हिन्दी
२

हित्य मण्डल प्रकाशन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kath

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : १२८

रामानुजाचार्य

दक्षिण के महान् संत का परिचय और उपदेश

हिन्दी १२२

लेखक
विष्णुदत्त 'विकल'

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

National Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६०
मूल्य
[illegible]० सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
दिगम्बर प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

CC-0. Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पाठकों से

इस माला में आप कई संतों और भक्तों का परिचय पा चुके हैं। उनके वचन भी पढ़ चुके हैं। इस पुस्तक में दक्षिण के एक महान् आचार्य का हाल दिया गया है और अन्त में उनके कुछ चुने हुए विचार। जीवनी और विचारों को पढ़कर महसूस होता है कि वह कितने ऊंचे दर्जे के आदमी थे।

ऐसी पुस्तकों का बड़ा महत्त्व है। उनसे जीवन को ऊपर उठाने में मदद मिलती है।

हमें विश्वास है कि इस पुस्तक को छोटा-बड़ा जो भी पढ़ेगा, उसीको लाभ होगा।

—सम्पादक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रामानुजाचार्य

: १ :

वैष्णवों में चार सम्प्रदाय हैं। रामानुज, मध्व, बल्लभ और निम्बार्क। पहले सम्प्रदाय के चलानेवाले हैं श्री आचार्य रामानुज।

मद्रास नगर से चौदह कोस पर पैरुम्बूदूर नाम का एक गांव हैं, जिसे महाभूतपुरी भी कहते हैं। आज से कोई एक हजार साल पहले की बात है। इसी गांव में श्री केशवाचार्य नाम के एक ईश्वर-भक्त विद्वान ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम था कान्तिमती। वह बड़ी पतिव्रता और धर्मपरायण थी।

केशवाचार्य के कोई सन्तान न थी। समुद्र के किनारे पर भगवान पार्थसारथि का एक मंदिर था। केशवाचार्य ने सन्तान के लिए वहां एक यज्ञ किया। यज्ञ पूरा होने के बाद भगवान ने सपने में उनसे कहा, "मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। मैं स्वयं तुम्हारे घर में पुत्र के रूप में जन्म लूंगा।"

इस घटना के ठीक एक साल बाद ९३९ शक संवत् ईसवी सन् १०१७, चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उनके घर एक बड़े सुन्दर और होनहार बालक का जन्म हुआ। इन्हें लक्ष्मण का अवतार माना जाता है। इसीलिए नाम रामानुज रक्खा गया।

रामानुज छुटपन से ही बड़े बुद्धिमान थे। एक बार सुन लेने पर उन्हें सारा पाठ याद हो जाता था। समय के अनुसार उनके यज्ञोपवीत आदि संस्कार हुए। धर्म की बातों में उन्हें बहुत रुचि थी। साधु-संत और विद्वानों के पास बैठना उन्हें पसन्द था।

उस समय कांचीपूर्ण नाम के एक बहुत ऊंचे भक्त थे। रामानुज के घर के सामने से वह रोज आते-जाते थे। एक दिन रामानुज ने कांचीपूर्ण को अपने घर बुलाकर भोजन कराया। भोजन के बाद रामानुज ने कांचीपूर्ण के पैर दबाने की इच्छा की। कांची बोले, "आप ऊंचे कुल के ब्राह्मण हो। मैं ठहरा नीच वर्ण। आपकी सेवा करना मेरा धर्म है। आप मेरी सेवा करें यह ठीक नहीं।" इसपर श्री रामानुज ने कहा, "जनेऊ धारण करने या ज्यादा छूत-छात करने से ही कोई ब्राह्मण नहीं होता। जो प्राणिमात्र में भगवान को देखता है, जो प्रभु का भक्त है, वही सच्चा ब्राह्मण है।"

रामानुज बिना जात-पांत के सभीको भगवान

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

की भक्ति का अधिकारी मानते थे। मानव-मात्र में भगवान हैं, यह उनका कहना था।

: २ :

रामानुज जब सोलह साल के हुए तो उनका विवाह तंजामाम्बा नाम की एक रूपवती ब्राह्मण कन्या से होगया। विवाह के थोड़े ही दिनों बाद रामानुज के पिता की मृत्यु होगई। इससे उन्हें बहुत दुःख हुआ। जब पिता के सब संस्कार हो चुके तो रामानुज ने अपना गांव छोड़ देने का विचार किया। कुछ समय बीतने पर कांचीपुर में रामानुज ने मकान बनवा लिया। अपनी पत्नी को लेकर वह कांचीपुर चले गये।

कांचीपुर में यादव प्रकाश नाम के एक बहुत बड़े वेदान्ती थे। वह ईश्वर की मूर्ति के विरोधी थे। रामानुज इन्हींकी पाठशाला में पढ़ने जाने लगे।

एक दिन यादव प्रकाश छात्रों को पढ़ा रहे थे। पढ़ाते समय एक ऐसा वाक्य आगया, जिसका यादव-प्रकाश द्वारा किया गया अर्थ रामानुज को नहीं जंचा। इसपर यादव प्रकाश ने कहा, "रामानुज तुम इसका क्या अर्थ करते हो?" रामानुज ने अपना भाव बतला दिया। रामानुज ने जो भाव कहा, वह जोरदार था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यादव प्रकाश ऊपर से तो खुश हुए, लेकिन उनके मन में जलन पैदा होगई।

इसी तरह दो-तीन बार हुआ। इससे रामानुज की प्रशंसा दूर-दूर तक के पंडितों में फैलने लगी। रामानुज की बुद्धि तेज थी। वह बड़े शांत और कोमल स्वभाव के थे। उनका रूप बहुत ही लुभावना था। गुरु के लिए उनके मन में बहुत आदर था। रामानुज की प्रसिद्धि को देखकर यादव प्रकाश ने सोचा—यह रामानुज जब अभी से मेरे मत का खंडन करता है तो आगे चलकर तो, पता नहीं, क्या करेगा। इसलिए जिस तरह भी हो, इस कांटे को निकालना ही होगा।

एक दिन यादव प्रकाश ने अपने शिष्यों से कहा, "रामानुज से कहो कि गुरुजी काशी-यात्रा को जा रहे हैं। तुम भी साथ चलो।" इस तरह उन्होंने सोचा—जब कोई निर्जन स्थान आयगा तो रामानुज को वहीं मारकर गाड़ देंगे।

रामानुज खबर मिलने पर बाकी शिष्यों के साथ काशी जाने को तैयार होगये। उन्हीं शिष्यों में गोविन्द नाम का एक विद्यार्थी था। गोविन्द रामानुज का मौसेरा भाई था। उसे किसी प्रकार यादव प्रकाश के इरादे का पता चल गया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

यात्रा शुरू हुई। जब ये लोग विन्ध्याचल के जंगलों को पार कर रहे थे तो मौका देखकर गोविन्द ने रामानुज को सारा भेद बता दिया। रामानुज ने सुना तो वह डर गये। वह कुछ दूर तो साथ चले, परन्तु एक जगह पहुंचकर चुपचाप भाग गये। यादव प्रकाश को जब पता चला कि रामानुज भाग गया तो इधर-उधर खोज की, मगर उनका पता न चला।

रामानुज घबराकर अकेले ही उस बियाबान

रामानुज थककर एक पेड़ के नीचे बैठ गये।

जंगल में भूख और प्यास से व्याकुल होकर भटक रहे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

थे। दिन छिपने को आगया था। वह थककर एक पेड़ के नीचे बैठ गये। इतने में एक व्याध अपनी स्त्री के साथ वहां प्रकट हुआ। व्याध की स्त्री ने रामानुज से पूछा—

"पुत्र, तुम इस बीहड़ वन में कैसे आगये? तुम ब्राह्मण-पुत्र मालूम होते हो। तुम्हारा घर कहां है और किधर जा रहे हो?"

रामानुज ने जवाब दिया, "माता! मेरा घर तो यहां से बहुत दूर दक्षिण में है। मेरे गांव का नाम कांचीपुर है।"

व्याध ने कहा, "हम भी दक्षिण के तीर्थों की यात्रा को जा रहे हैं। कांचीपुर होकर सेतुबन्द रामेश्वर जायंगे। डर की कोई बात नहीं। तुम हमारे साथ चलो।"

रामानुज को लगा, व्याध और उसकी स्त्री के रूप में उसकी सहायता के लिए जैसे लक्ष्मी-नारायण स्वयं आये हैं। यही सोचकर रामानुज उन दोनों के साथ हो लिये।

कुछ ही देर बाद उस वन को पार करके एक जगह पहुंच गये। वहां व्याध ने लकड़ियां लाकर आग जलाई। रामानुज के लिए पत्तों का बिछौना कर दिया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अगले दिन सवेरे ही उठकर फिर आगे चल पड़े। रास्ते में पानी की एक बावड़ी थी। व्याध की स्त्री ने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" रामानुज बावड़ी में उतरकर जब जल लेकर ऊपर आये तो न वहां व्याध था और न उसकी स्त्री। रामानुज ने चारों ओर देखा, मगर कुछ पता न चला।

उसी समय एक यात्री उसी रास्ते से गुजरा। रामानुज भी उसीके साथ चल पड़े। दो फर्लांग जाने पर दूर से मन्दिर के शिखर तथा ऊंचे-ऊंचे मकान दिखलाई पड़े। रामानुज ने उस आदमी से पूछा, "यह कौन-सा नगर दीख पड़ता है?" उसने कहा, "अरे, कैसी बात करते हो। यह कांचीपुर है। तुम भी तो इसी नगर में रहते हो। मैंने तुम्हें कई बार वहां यादव प्रकाश की पाठशाला में पढ़ते हुए देखा है। जिस बावड़ी का जल तुमने पिया है, वह कांचीपुर की प्रसिद्ध बावड़ी 'शालकूप' ही तो थी—वह बावड़ी जिसके जल से लोगों के सारे रोग दूर हो जाते हैं। इसीके लिए दूर देशान्तर से लोग कांचीपुर आते रहते हैं।"

रामानुज को अब पूरा विश्वास होगया कि व्याध दम्पती भगवान लक्ष्मी-नारायण ही थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

: ३ :

रामानुज जब घर पहुंचे तो उनकी माता कान्तिमती तथा उनकी पत्नी तंजामाम्बा बहुत प्रसन्न हुईं। रामानुज ने अपनी मां को यादव प्रकाश के छल-कपट की सब बातें बताईं और कहा कि इन बातों को अपने मन में ही रखना। अब रामानुज अपने घर पर ही शास्त्रों का पठन-पाठन करने लगे।

कुछ दिन बाद यादव प्रकाश भी अपने शिष्यों के साथ वापस आगये। जब उन्हें मालूम हुआ कि रामानुज आ गये हैं तो वह बहुत घबराये। लेकिन जब उन्हें पता चला कि रामानुज ने यह बात किसीसे नहीं कही तो उन्हें शान्ति मिली।

कांचीपुर के राजा की कन्या बड़ी सुन्दर थी। एक बार उसे प्रेत-बाधा होगई। राजा ने यादव प्रकाश को बुलवाया। वह मंत्र-तंत्र के भी जानकार थे। परन्तु राजकुमारी पर उनके मंत्र-तंत्र का कोई असर न हुआ।

तब किसीने रामानुज को बुलाने को कहा। रामानुज ने आकर राजकुमारी के सिर पर हाथ रखकर कहा कि तुम कोई भी प्रेत हो, मगर इसी क्षण राजकुमारी को छोड़कर चले जाओ और अपने चले

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जाने का प्रमाण भी दो। प्रेत ने कहा, "मैं जाता हूं और इस बात का प्रमाण है सामनेवाले पीपल की शाखा का टूटकर गिरना।" उसी समय पीपल की एक शाखा टूटकर गिर पड़ी। राजकुमारी होश में आकर उठ बैठी।

राजकुमारी के ठीक होने पर राजा ने रामानुज का बहुत आदर किया। इस घटना से रामानुज की प्रसिद्धि बहुत फैल गई।

एक दिन रामानुज अपने घर के आंगन में बैठकर पढ़ रहे थे। तभी परम भक्त कांचीपूर्ण वहां आगये। रामानुज ने उठकर उनका सत्कार किया। आसन पर बिठलाकर रामानुज बोले, "भगवन्, भगवान वरदराज की कृपा है, जो आज आप मेरी कुटिया पर पधारे हैं। मैं चाहता हूं कि आप मुझे अपना शिष्य बना लें। यह बात सुनकर कांचीपूर्ण ने कहा, "पुत्र रामानुज, मैं तो एक वैश्य हूं और तुम ब्राह्मण हो। तुम वेद-शास्त्रों के पण्डित हो और मैं अनपढ़ गंवार हूं। उम्र में मैं तुमसे जरूर बड़ा हूं। वेद-पुराणों की बातें मैं क्या समझूं? मैं भगवान वरदराज के टूटे-फूटे शब्दों में गुणगान भर कर लेता हूं, बस।"

रामानुज बोले, "महाराज, असल में तो आप ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पण्डित हैं। सत्य स्वरूप परमात्मा को प्राणिमात्र में देखनेवाला ही पण्डित हैं। छः शास्त्रों और अठारह पुराणों को पढ़कर भी जिसमें नीच-ऊंच, छोटे-बड़े और जाति-पांति का भेद है, वह तो चन्दन का भार ढोनेवाले गधे के समान है।"

यह कहकर रामानुज उनके चरणों पर गिर पड़े। कांचीपूर्ण ने रामानुज को उठाकर छाती से लगा लिया फिर कहा कि तुम 'शालकूप' से रोज एक कलसा पानी का भरकर भगवान वरदराज के मंदिर में ले आया करो। तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। रामानुज ने उनकी आज्ञानुसार वैसा ही किया।

: ४ :

उन्हीं दिनों एक बहुत बड़े भगवद्भक्त तथा आचार्य हुए। उनका नाम था यामुनाचार्य। उन्हें आलवन्दार भी कहते हैं। वह परम वैष्णव थे। उनके बहुत-से शिष्य थे।

एक बार जब वह बहुत बीमार होगये तो उन्होंने अपने शिष्यों को कहा, "देखो, हमारे न रहने पर भी शोक न करना। हरिजनों की सेवा भगवान की सेवा समझो। हरि-भक्तों की न तो कोई जाति होती है और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

न कोई कुल होता है। तुम चाण्डाल-कुल में जन्म लेनेवाले तिरुप्याण आलावार की सेवा करना। तुम्हारा कल्याण होगा।"

कुछ काल बाद यामुनाचार्य ठीक होगये। एक दिन कांचीपुर से दो ब्राह्मण आये। यामुनाचार्य ने उनसे रामानुज के बारे में पूछा। उन्होंने रामानुज के सब हाल-चाल बतलाये। यामुनाचार्य सुनकर बोले, "रामानुज, में एक बहुत बड़ी ईश्वरीय शक्ति है। उन्हें तुम लोग यहां बुलाकर अपने साथ रखो। इसमें तुम्हारा सब प्रकार भला होगा।"

कुछ समय के उपरांत श्री आलवन्दार यामुनाचार्य फिर बीमार होगये। उसी दशा में उन्होंने स्नान किया। भगवान रंगनाथ के मंदिर में जाकर दर्शन किये। फिर पद्मासन लगाकर बैठ गये। अपने शिष्यों को बुलाकर अन्तिम उपदेश दिया और थोड़ी देर बाद ब्रह्म में लीन होगये। उनके शिष्य मिलकर काबेरी के तट पर उन्हें अन्तिम संस्कार के लिए ले गये।

रामानुज भी वहीं पहुंच गये। यामुनाचार्य के निर्जीव शरीर को देखकर रामानुज को बहुत दुःख हुआ। काफी देर तक विलाप करने के बाद जब शांत हुए तो उन्होंने एक अद्भुत बात देखी। उनकी तीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उंगलियां मुड़ी हुई हैं। वहां खड़े हुए उनके शिष्यों से रामानुज ने पूछा, "क्या इन महापुरुष की उंगलियां पहले से ही ऐसी हैं?" उत्तर मिला, "नहीं।" सब रहस्य समझकर रामानुज ने कहा, "मैं विष्णु-मत में दृढ़ रहकर वैष्णव धर्म का प्रचार करूंगा।" इसपर एक उंगली सीधी होगई।

रामानुज फिर बोले, "लोक-मंगल के लिए मैं श्रीभाष्य की रचना करूंगा।" दूसरी उंगली सीधी हो गई।

इसके बाद रामानुज ने कहा, "जिन परम पावन पराशर मुनि ने भक्ति के प्रकाश के लिए विष्णु-पुराण की रचना की, उनका ऋण चुकाने के लिए मैं किसी महान पंडित वैष्णव को उनके नाम से प्रसिद्ध करूंगा।" उनके इतना कहने के साथ तीसरी उंगली भी सीधी हो गई। यह देखकर सभी लोग चकित होगये।

यामुनाचार्य को समाधि देने से पहले रामानुज कांचीपुर को चल दिये। जब लोगों ने उनसे कहा कि भगवान रंगनाथ के दर्शन करके जाओ तो उन्होंने कहा कि जिन भगवान ने मेरी इच्छा पूर्ण नहीं की, मैं उनके दर्शन नहीं करता।

इससे पता चलता है कि एक लोकोपकारी और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जनता का भला करनेवाले ईश्वर-भक्त महात्मा के प्रति रामानुज की कितनी श्रद्धा थी।

: ५ :

घर आकर रामानुज उदास रहने लगे। उनका मन घर के धन्धों में नहीं लग रहा था। इससे उनकी स्त्री अन्दर-ही-अन्दर जलती रहती। मगर मुख से कुछ नहीं कह सकती थी।

थोड़े ही दिनों बाद रामानुज की माता कांतिमती का स्वर्गवास होगया। रामानुज के मन को और भी अधिक ठेस लगी। अब उनका अधिक समय कांचीपूर्ण के साथ कटने लगा।

एक दिन रामानुज ने कांचीपूर्ण को अपने घर भोजन के लिए निमंत्रण दिया। रामानुज की स्त्री ने दूसरे दिन सबेरे स्नान करके भोजन बनाया। जब भोजन बनाया तो रामानुज कांचीपूर्ण को उनके आश्रम से लेने गये। रामानुज का विचार था कि कांचीपूर्ण जब भोजन कर चुकेंगे तो मैं उनका प्रसाद उनकी थाली से लेकर अपना जीवन पावन करूंगा।

कांचीपूर्ण रामानुज के मन का भाव ताड़ गये थे। इसलिए वह दूसरे रास्ते से चुपचाप रामानुज के घर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पहुंचे। रामानुज की स्त्री से आकर बोले, "माता मुझे आज बहुत जल्दी मंदिर जाना है। जो कुछ भोजन बन चुका है, वह दे दो।"

तंजामाम्बा ने एक पत्तल में भोजन परोस दिया। कांचीपूर्ण ने झट-पट भोजन किया और अपनी पत्तल उठाकर बाहर फेंक दी और भोजनवाली जूठी जगह गोबर से लीपकर चुपचाप चले गये।

रामानुज कांचीपूर्ण को आश्रम में न देखकर वापस घर आ गये। देखा तो उनकी स्त्री स्नान करके फिर भोजन बनाने बैठी है। रामानुज ने यह सबकुछ देखा तो पूछा, "तुमने तो भोजन बना लिया था, अब दोबारा क्यों बना रही हो?" स्त्री ने कहा कि कांचीपूर्ण आये थे। मैंने उन्हें भोजन करा दिया। जो कुछ बचा था वह एक शूद्र को दे दिया, क्योंकि हीन वर्ण पहले खा गया तब आपको वह भोजन कैसे परोसती? अब पवित्र होकर फिर बनाती हूं।

रामानुज को यह सुनकर क्रोध आगया। वह बोले, "अरी मूर्ख, कांचीपूर्ण ब्राह्मण न सही, परन्तु वह भगवान के परम भक्त तो हैं। उनके सामने तो बड़े-से-बड़ा पंडित भी हीन है। तूने उनके साथ शूद्रों जैसा व्यवहार किया। मैं तो आज उनकी पत्तल का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रसाद लेकर पवित्र होना चाहता था। मेरा दुर्भाग्य है, जो प्रसाद न मिल सका।"

एक दिन कोई गरीब शूद्र तेल मालिश के लिए आया। उसकी दशा देखकर रामानुज का मन करुणा से भर गया। स्त्री से कहा, "यदि घर में कुछ खाने को हो तो दे दो।" स्त्री ने साफ जवाब दे दिया। जब स्त्री स्नान करने गई तो रामानुज ने घर में जाकर देखा, बहुत-सा खाना रखा था। रामानुज ने पेट भर-कर उस शूद्र को भोजन कराया। तब उन्हें सन्तोष हुआ।

एक दूसरे बड़े महात्मा थे। नाम था महापूर्ण। जाति के शूद्र। रामानुज उनके प्रति बहुत श्रद्धा रखते थे। रामानुज ने महापूर्ण से मंत्र-दीक्षा लेकर उन्हें गुरु बनाया। रामानुज की स्त्री ने भी उन्हींसे गुरु-मंत्र लिया।

एक दिन महापूर्ण की स्त्री कुएं पर पानी भरने आई। उसी समय रामानुज की स्त्री उसी कुएं पर पानी भरने आई। पानी भरते समय महापूर्ण की स्त्री के घड़े का पानी रामानुज की स्त्री के घड़े पर पड़ गया। इसपर तंजामाम्बा क्रोध में आकर बोली, "तुम्हारी आंखें नही है क्या? तुम्हारी जाति हमसे नीची है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुम्हारा छुआ जल हमारे किस काम का ? तुम हमारे गुरु की स्त्री भले ही हो, परन्तु जाति में तो हीन ही हो ?"

महापूर्ण की स्त्री शांत स्वभाव की थी। चुपचाप घर चली गई। महापूर्ण को जब यह मालूम हुआ तो वह स्त्री के साथ घर छोड़कर श्रीरंगम चले गये।

रामानुज को जब अपनी स्त्री की इन हरकतों का पता चला तो वह बहुत दुखी और बेचैन होगये। गुरु-

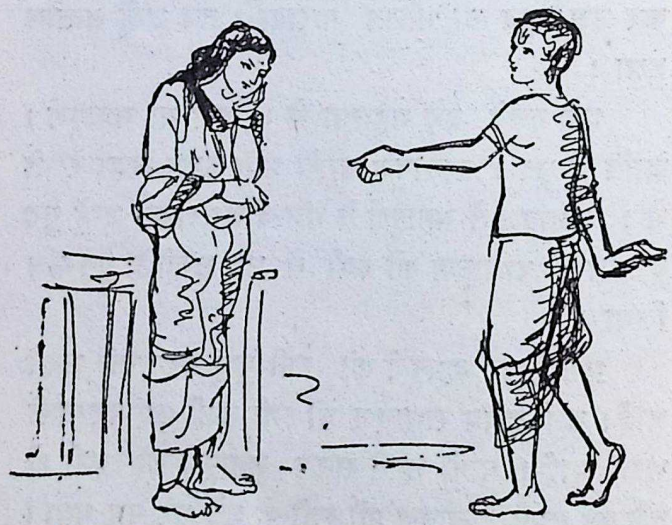

"तेरा मुंह देखने से भी पाप लगता है।"

पत्नी के अपमान से रामानुज इतने अधीर हो उठे कि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उन्होंने संन्यास ले लेने का निश्चय कर लिया और पत्नी से कहा, "तेरा मुँह देखने से भी पाप लगता । तू नीच-ऊंच और जात-पांत के अभिमान में डूबी है।"

आखिर एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी को उसके मायके भेज दिया और स्वयं घर छोड़कर मंदिर की ओर चल पड़े। स्त्री को त्यागकर रामानुज को ऐसा लगा, मानों एक बहुत भारी बोझ सिर से उतर गया।

भगवान वरदराज के मंदिर में जाकर रामानुज ने कहा, "हे प्रभो! अब मैं सभी प्रकार से आपका हो चुका। संसार से मेरा किसी तरह का नाता नहीं रहा।"

इसके बाद भगवा वस्त्र पहनकर सरोवर के तट पर चले गये। वहां उन्होंने त्रिदण्ड धारण कर लिया। अब रामानुज 'यति-राज' श्री रामानुजाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।

: ६ :

भरी जवानी में रामानुज के संन्यासी बन जाने से लोगों को बड़ा अचम्भा हुआ। रामानुज का एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भानजा दाशरथि और कूरेश नाम का एक दूसरा व्यक्ति उनका शिष्य बन गया।

रामानुज के विद्यागुरु यादव प्रकाश के मन में बहुत अशान्ति थी। रामानुज से जो छल-कपट किया था, यह उसीका प्रभाव था। एक दिन यादव प्रकाश की मां रंगनाथ के दर्शन करने आई। उसने जब रामानुज के तेज और रूप को देखा तो चकित होगई। उसने रामानुज को भगवान् वरदराज का दूसरा रूप समझकर उन्हें प्रणाम किया।

वह घर पहुंची। उसने सोचा, यादव प्रकाश से रामानुज ने विद्या पढ़ी है। परन्तु रामानुज भगवान के अवतार हैं। जब यादव प्रकाश को रामानुज का शिष्य बनाऊंगी तभी उसका मंगल होगा।

एक दिन यादव प्रकाश रामानुज के पास जाकर बोले, "रामानुज, तुम सचमुच राम के अनुज हो। मैं अज्ञानवश तुम्हें पहचान नहीं सका। तुम मेरा उद्धार करो। मेरे अपराध क्षमा करो। मैं तुम्हारी शरण हूं।

गुरु को रामानुज ने उठाकर छाती से लगा लिया। माता की आज्ञा से यादव प्रकाश ने रामानुज से वैष्णव धर्म की दीक्षा ली। संन्यास ग्रहण किया। यादव

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाश का नाम गुरुदत्त गोविन्ददास होगया। यादव प्रकाश ने 'यति-धर्म-समुच्चय' नाम की एक पुस्तक लिखकर गुरु को भेंट की। उस समय यादव प्रकाश की आयु अस्सी साल की थी।

कुछ समय बाद यादव प्रकाश का स्वर्गवास हो-गया।

रामानुज से एक दिन उनके गुरु महापूर्ण ने कहा, "रामानुज, गोष्ठीपुर ग्राम में गोष्ठीपूर्ण नाम के एक बहुत बड़े सन्त हैं। उनके पास श्रीयामुनाचार्य का दिया हुआ रहस्यमय मंत्र है। तुम उसे प्राप्त करो।"

रामानुज वहां पहुंच गये। लेकिन गोष्ठीपूर्ण ने रामानुज को कुछ न बताया। इसी तरह अठारह बार गये। अन्त में उन्होंने कहा, "रामानुज, जो विष्णु-मंत्र मैं तुम्हें बतला रहा हूं, वह किसीको भी न बतलाना। कलियुग में कोई भी इस मंत्र का अधिकारी नहीं। इस मंत्र को जो सुनेगा उसकी मुक्ति होगी। इसमें कुछ भी संदेह नहीं।"

रामानुज गोष्ठीपूर्ण से मंत्र लेकर जब विष्णु-मंदिर की ओर आने लगे तो उनके मन में आया, यदि इस विष्णु-मंत्र से मुक्ति होगी तो क्यों न लोगों का कल्याण किया जाय।

CC-0. Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तब जो भी मार्ग में मिला, बिना जात, कुल और गोत्र पूछे सभीको पुकार-पुकारकर कहा, "आओ भाई, आज मैं तुम्हें जीवन और मरण से पार लगानेवाला विष्णु-मंत्र सुनाता हूं।"

लोगों ने देखा, एक तपस्वी संत सभीको प्यार से बुला रहा है। देखते-देखते हजारों की भीड़ इकट्ठी होगई। ऊंचे स्थान पर खड़े होकर रामानुज ने सबको परम कल्याणकारी विष्णु-मंत्र का उपदेश दिया। उसे सुनकर लोगों का हृदय भक्ति और प्रेम से गद्‌गद् हो उठा।

उधर गोष्ठीपूर्ण को रामानुज की इस बात का पता चल गया। उन्होंने रामानुज से कहा, "रामानुज, तूने मेरी आज्ञा के विरुद्ध विष्णु-मंत्र सब लोगों को बता दिया। तुझ जैसे पापी का मुख देखना भी ठीक नहीं, तू महानीच है। तेरे जैसे को नरक में भी स्थान नहीं मिलेगा।"

बड़ी शांति से रामानुज ने उत्तर दिया, "भगवन्, मैंने जान-बूझकर ही नरक का मार्ग पकड़ा है। आपने ही तो कहा था कि जो भी इस विष्णु-मंत्र को सुनेगा उसकी मुक्ति होगी। यदि अकेले मेरे नरकवास से हजारों का मंगल हो तो मुझे नरक-वास में भी अत्यन्त सुख मिलेगा।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रामानुज की इस ऊंची भावना को देखकर गोष्ठीपूर्ण को अपनी संकुचितता का ज्ञान हुआ। वह बहुत पछताये। उठकर रामानुज को हृदय से लगाकर बोले, "रामानुज, आज तुमने मुझे जात-पांत और नीच-ऊंच की भावना से ऊपर उठाकर सच्ची मानवता का ज्ञान करा दिया। तुम सचमुच महान हो। मेरा अपराध क्षमा करो।"

रामानुज ने कहा, "भगवन्, आपको मैं क्षमा क्या करूं? आप तो मेरे पूज्य गुरु हैं। आपका तो शाप भी वरदान ही सिद्ध होगा।"

यह सुनकर गोष्ठीपूर्ण प्रसन्न होगये और उन्होंने अपने पुत्र को रामानुज का शिष्य बना दिया।

: ७ :

एक समय रामानुज एक निर्धन शिष्य के घर चले गये। वह शिष्य भिक्षा मांगकर गुजारा करता था। जिस समय रामानुज शिष्य के घर पहुंचे, वह भिक्षा मांगने गया हुआ था।

शिष्य की पत्नी लक्ष्मी ने प्रणाम करके कहा, "गुरुदेव! आप विराजें। मेरे पति भिक्षा को गये हैं, मैं अभी भोजन बनाती हूं। तबतक आप विश्राम करें।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रामानुज आसन पर बैठ गये। लक्ष्मी ने घर में देखा तो अनाज का दाना भी नहीं था। वह चिन्ता करने लगी। तभी उसे एक बात याद आई। लक्ष्मी के पड़ोस में एक धनवान बनिया था। वह उसके रूप पर मोहित था। उसने सैकड़ों बार लक्ष्मी को धन का लालच दिया। मगर सती लक्ष्मी ने ध्यान नहीं दिया। आज लक्ष्मी ने सोचा, यदि इस शरीर के द्वारा नारायण-रूप गुरु की सेवा कर सकूं तो जीवन धन्य हो जायगा।

यह सोच सती लक्ष्मी ने बनिए से जाकर कहा, "आज घर में दाना भी नहीं है। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगी। तुम सामान दे दो, जिससे गुरु महाराज को भोजन करा सकूं।"

बनिए ने खुश होकर सामान दे दिया। श्रद्धा-भक्ति से लक्ष्मी ने भोजन बनाया और शिष्योंसहित अपने गुरु को भोजन खिलाया। भोजन करके सबने आशीर्वाद दिया।

उसी समय लक्ष्मी का पति वरदाचार्य भी आ गया। गुरु रामानुज तथा उनके शिष्यों को देखकर वरदाचार्य को बड़ी प्रसन्नता हुई। जब उन्हें पता चला कि लक्ष्मी ने उस धनिक बनिए से सामान लाकर गुरुदेव

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को भोजन कराया तो क्रोध करने के स्थान पर लक्ष्मी की बहुत प्रशंसा की। इस बात का पता रामानुज को भी होगया।

उसके बाद वरदाचार्य प्रसाद लेकर लक्ष्मी के साथ उस बनिए के पास पहुंचे। बनिए ने प्रसाद लिया। वैष्णव के प्रसाद का यह प्रभाव हुआ कि बनिए की पाप-भावना दूर होगई। उसने लक्ष्मी के चरणों में प्रणाम करके कहा, "माता, मुझे क्षमा करो। आज तुम्हारे प्रसाद से मेरा पापमय जीवन पुण्यमय बन गया।"

दोनों पति-पत्नी उस बनिए को आशीर्वाद देकर अपने घर आ गये।

रामानुज वरदाचार्य और लक्ष्मी को भक्ति का वरदान देकर श्रीरंगम आ गये। श्रीरंगम के मंदिर में रामानुज के कई हजार शिष्य थे। उनमें बहत्तर शिष्य प्रधान थे। ये सभी शिष्य विद्वान, त्यागी, भक्त और संत थे।

एक दिन अकस्मात रामानुज को अपने परम पूज्य यामुनाचार्य के अन्तिम संस्कार के समय की हुई तीनों प्रतिज्ञाएं याद आईं। उन्होंने कहा था कि मैं 'श्रीभाष्य' की रचना करूंगा। वह कश्मीर गये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वहां से 'बोधायन वृत्ति' नामक पुस्तक लाये, जो और कहीं नहीं मिलती थी। इस प्रकार 'श्रीभाष्य' की रचना की।

इसके बाद 'वेदान्त दीप', 'वेदातन्सार', वेदार्थ-संग्रह' और 'गीता-भाष्य' की रचना की। 'द्राविड़ वेद' रचकर यामुनाचार्य की प्रथम इच्छा पूर्ण की तथा 'श्रीभाष्य' की रचना करके दूसरी अभिलाषा पूरी करदी।

इसके बाद रामानुज ने सारे भारत में यात्रा करके पंडितों से शास्त्रार्थ करके वैष्णव-धर्म का प्रचार किया इस प्रचार को वैष्णव लोग 'दिग्विजय' के नाम से पुकारते हैं।

: ८ :

एक दिन श्रीरंगम में बहुत बड़ा उत्सव था। हजारों नर-नारियों की भीड़ थी। गरुड़ पर भगवान की सवारी शोभित थी। सैकड़ों ब्राह्मण वेद-पाठ करते जाते थे। भक्तगण हरिनाम-कीर्तन कर रहे थे। जनता की अपार भीड़ भगवान का जय-जयकार कर रही थी।

उसी भीड़ में एक सुन्दर और पुष्ट शरीर का एक युवक भी था। एक परम सुन्दरी स्त्री भी उसके साथ थी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह लोक-लाज छोड़कर उसी स्त्री की ओर देखता जा रहा था। एक ब्राह्मण को उसकी यह बात पसन्द नहीं आई। ब्राह्मण ने रामानुज से कहा। उन्होंने उसे पास बुलवाकर कहा, "तुम्हारा क्या नाम है और तुम्हारा घर कहां है ?" उसने जवाब दिया, "यतिराज ! मैं निपुल नगर का रहनेवाला हूं, धनुर्दास मेरा नाम है कुश्ती लड़ना मेरा काम है !" रामानुज ने पूछा, "इस स्त्री में ऐसी क्या खूबी है जो तुम लोक-लाज छोड़कर इसी ओर टकटकी लगाकर देखते जा रहे हो।" धनुर्दास ने कहा, "भगवन् ! यह मेरी स्त्री है। इसके नेत्र इतने सुन्दर हैं कि आज तक संसार में मैंने किसीके नेत्र नहीं देखे।" रामानुज ने कहा, "मैं तुम्हें ऐसे नेत्र दिखलाऊंगा कि तीनों लोकों में नहीं देख सकोगे।"

दिन छिपने के बाद रामानुज धनुर्दास को अपने साथ मंदिर में ले गये। संध्या-आरती के प्रकाश में जब धनुर्दास ने भगवान के दिव्य नेत्रों को देखा तो वह प्रेम मग्न होगया। उसकी सांसरिक वासना खत्म होगई। वह भक्त बन गया। उसकी स्त्री भी पति के साथ साधु-स्वभाव होगई।

रामानुज धनुर्दास की श्रद्धा और भक्ति पर मोहित होगये। जब स्नान करके आते तो धनुर्दास का हाथ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पकड़कर आते। इससे ब्राह्मणों में ईर्ष्या पैदा होगई।

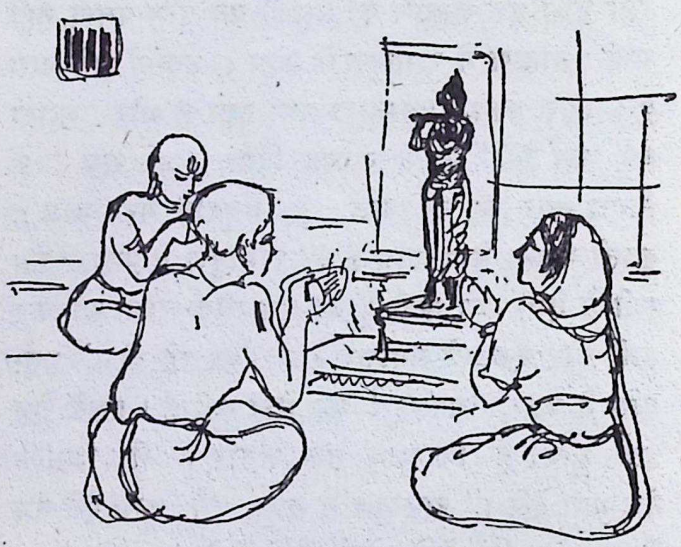

धनुर्दास भगवान के नेत्रों को देखकर प्रेम-मग्न हो गया।

वह आपस में कहने लगे कि धनुर्दास हीन वर्ण है। रामानुज स्नान करके उसका हाथ पकड़कर आते हैं।

ब्राह्मणों की यह बात रामनुज ने सुनी तो एक दिन रात के समय ब्राह्मणों की जो लंगोटियां सूख रहीं थीं, उसमें से कुछको उन्होंने काट दिया। सबेरे उठकर वे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे। एक दूसरे को नीचों जैसी गन्दी गालियां देने लगे।

उसी दिन रात को रामानुज ने ब्राह्मणों से कहा कि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैं धनुर्दास को अपने पास बिठा रखूंगा, तुम धनुर्दास की स्त्री के सोने के गहने सोते समय उतार लाना।

कुछ रात बीतने पर ब्राह्मण धनुर्दास की स्त्री के पास पहुंचे। उन्होंने एक ओर के गहने उतार लिये। धनुर्दास की स्त्री जाग रही थी। वह चुपचाप पड़ी रही। उसने करवट बदली कि ब्राह्मण दूसरी ओर के गहने भी उतार लें। ब्राह्मण समझे कि हेमाम्बा जाग गई। वे भाग गये।

धनुर्दास से रामनुज बोले, "अब काफी रात होगई, तुम घर जाओ।" धनुर्दास प्रणाम करके चला गया। तभी रामानुज ने दो शिष्यों से कहा, "धनुर्दास के घर जाकर चुपचाप सुनो कि क्या बातें होती हैं।"

धनुर्दास जब घर पहुंचा तो स्त्री ने सब बात बतलाई। धनुर्दास ने स्त्री से कहा, "तुमने ब्राह्मणों को सब गहने क्यों नहीं उतारने दिये। तुम्हें अभी भी गहनों से प्यार है?"

वे शिष्य यह बात सुनकर रामानुज के पास आये और जो सुना था, वह बता दिया। रामानुज ने उन ब्राह्मणों से कहा, "तुम शास्त्रों के अभिमान में चूर हो। बताओ सच्चे ब्राह्मण का आचारण तुममें है या धनुर्दास में?" यह सुनकर ब्राह्मण लज्जित होगये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रामानुज ने आगे कहा, "गुणों से ही मनुष्य का कल्याण होता है, जाति से नहीं। जाति के झूठे अहंकार में चूर व्यक्ति मनुष्यता का सबसे बड़ा शत्रु है। ऊंच-नीच की भावना से बढ़कर दूसरा बड़ा शत्रु कोई नहीं।"

: ६ :

रामानुज कुछ समय तक धर्म-प्रचार करते-करते 'यादवाद्रिपति' नामक स्थान पर अपने शिष्योंसहित आगये। इस स्थान का नाम मेलकोटा भी है।

दक्षिण भारत में प्रत्येक मंदिर में दो मूर्तियां होती हैं। एक अचल और एक चल। अचल मूर्ति एक ही जगह स्थिर रहती है। चल मूर्ति वह कहलाती है जिसकी सवारी निकाली जाती है।

एक दिन रामानुज को स्वप्न में यादवाद्रिपति भगवान ने कहा, "पुत्र, मेरी चल मूर्ति दिल्ली के यवन-सम्राट के यहां है। उसे जाकर ले आओ। मेरी उस मूर्ति का नाम 'रामप्रिय' है।"

अगले दिन कुछ शिष्यों को साथ लेकर रामानुज दिल्ली की ओर चल पड़े। कुछ दिनों बाद दिल्ली पहुंचकर सम्राट से 'रामप्रिय' मूर्ति ले आये।

वह मूर्ति बादशाह की लड़की को बहुत प्रिय थी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जब उसे पता चला कि उसे रामानुज ले गये तो वह बहुत दुखी हुई। बादशाह ने बहुत समझाया, परन्तु वह नहीं मानी। तब बादशाह ने कुछ सैनिकों से कहा कि जाओ रामानुज से मूर्ति वापस ले आओ। जब सैनिक जाने लगे तो वह लड़की भी उनके साथ चल पड़ी। एक शहजादा भी, जो बहुत दिनों से बादशाह के पास रहता था और उसकी लड़की से प्रेम करता था, साथ हो लिया।

रामानुज को यह पता था कि बादशाह की लड़की उस मूर्ति को बहुत चाहती है। कहीं ऐसा न हो कि उसे पता चलने पर बादशाह मूर्ति वापस मंगवा ले। इसलिए उन्होंने विष्णु की चल मूर्ति को छिपाकर रख दिया। रास्ते में उन्हें तीन चाण्डालों ने मूर्ति को सुरक्षित पहुंचाने में बड़ी मदद दी। इसीलिए आज तक चाण्डालों को मेलकोटा के विष्णु-मदिर में तीन दिनों तक दर्शन करने का अधिकार है।

बादशाह की लड़की मूर्ति की खोज में दीवानी-सी घूमती-घामती मेलकोटा के विष्णु-मंदिर में पहुंच गई। उसकी गहरी भक्ति और प्रेम देखकर उस मुसलमान लड़की को रामानुज ने मंदिर में जाने की आज्ञा दे दी। भगवान के भक्त की कोई जाति नहीं होती।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शाहजादी बहुत दिन तक वहीं भगवान की भक्ति में डूबी रही और अन्त में वह भगवान के रूप में ही समा गई। उसका प्रेमी शहजादा भी भक्त बन गया। वह बाद में जगन्नाथ पुरी चला गया और वहीं उसका जीवन समाप्त हुआ।

: १० :

रामानुज काफी समय तक यादवाद्रि मेलकोटा में, जो मैसूर राज्य में है, रहे। वहां भी उन्होंने अपनी अमृत वाणी से लोगों को भक्ति और ज्ञान का उपदेश देकर उनका कल्याण किया। बाद में वहां से श्रीरंगम आगये।

जिस समय श्रीरंगम को चलने लगे तो उनके शिष्य बड़े दुखी हुए। रामानुज ने देखा कि शिष्य उनके विरह को सहन नहीं कर सकेंगे तो उन्होंने अपनी मूर्ति बनवाई और उसमें अपनी शक्ति और तेज का संचार कर दिया। फिर अपने भक्तों को वह मूर्ति देकर वह बोले, "मेरे प्रिय भक्तगण! इस मूर्ति को मेरा ही रूप समझो। जब भी तुम्हें मेरी याद आये, तुम इस मूर्ति का दर्शन करना। तुम्हें इससे उतना ही सुख और आनन्द प्राप्त होगा।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्री रामानुजाचार्य की मूर्ति

यह कहकर रामानुज अपने शिष्यों के साथ श्रीरंगम की ओर चल पड़े।

श्रीरंगम में एक दिन रामानुज जब शिष्यों को पढ़ा रहे थे तो पढ़ाते-पढ़ाते चुप बैठ गये। काफी देर तक कुछ नहीं बोले। उनका शरीर जड़ के समान होगया। उनकी आंखों से आंसुओं के कुछ बिन्दु गिर पड़े।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जिस समय उन्हें चेतना हुई तो शिष्यों ने इसका कारण पूछा। रामानुज ने कहा, "आज महाभूत-पुरी में हमारे भक्तों ने हमारी मूर्ति बनाकर प्राण-प्रतिष्ठा की है। हमें उन्होंने अपने प्रेम-पाश में बांध लिया। इस समय हमें वही ज्ञान हुआ।" वह मन्दिर आज तक मौजूद है।

रामानुज ने साठ साल श्रीरगम् में निवास किया। प्रतिदिन दूर-दूर से हजारों भक्त उनके दर्शनों को श्री-रंगम् में आया-जाया करते थे। हजारों भटके हुए मनुष्यों को बिना नीच-ऊंच तथा जाति-कुल-भेद के उन्होंने समान रूप से भक्ति-मार्ग का उपदेश किया।

इस प्रकार एकसौ बीस वर्ष तक पृथ्वी पर निवास-कर अन्त में इस महान संत ने महाप्रयाण किया। शरीर त्यागने से पहले उन्होंने अपने शिष्यों को बुला-कर अपने इस लोक से जाने का मतलब समझाया। सुनकर सारे शिष्य बिलख-बिलखकर रोने लगे। रामानुज ने यह देखकर उनसे कहा, "तुम लोगों को अज्ञानियों के समान नहीं रोना चाहिए। मैं सदैव तुम्हारे हृदय में निवास करता हूं और तुम मेरे हृदय में रहोगे।"

फिर सब शिष्यों को उन्होंने उपदेश-रत्न-माला

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दी, जिससे उनका मोह और अज्ञान दूर होगया। अन्त में उनकी आज्ञानुसार कुशल कारीगरों ने उनकी मूर्ति तैयार की। उस मूर्ति को कावेरी में स्नान कराया गया। स्वयं उस मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करके रामानुज ने कहा, "यह हमारा दूसरा रूप है। इससे तुम लोग किसी भी प्रकार का भेद-भाव न रखना।"

यह कहकर श्रीमद्रामानुजाचार्य शक-संवत् १०५९ (ईसवी सन् ११३०) में माघ शुक्ल दशमी, शनिवार के दिन मध्याह्न में, अपने गुरु महापूर्ण के चरणों का ध्यान करके परमपद में लीन होगये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जिस समय उन्हें चेतना हुई तो शिष्यों ने इसका कारण पूछा। रामानुज ने कहा, "आज महाभूतपुरी में हमारे भक्तों ने हमारी मूर्ति बनाकर प्राण-प्रतिष्ठा की है। हमें उन्होंने अपने प्रेम-पाश में बांध लिया। इस समय हमें वही ज्ञान हुआ।" वह मन्दिर आज तक मौजूद है।

रामानुज ने साठ साल श्रीरगम् में निवास किया। प्रतिदिन दूर-दूर से हजारों भक्त उनके दर्शनों को श्रीरंगम् में आया-जाया करते थे। हजारों भटके हुए मनुष्यों को बिना नीच-ऊंच तथा जाति-कुल-भेद के उन्होंने समान रूप से भक्ति-मार्ग का उपदेश किया।

इस प्रकार एकसौ बीस वर्ष तक पृथ्वी पर निवासकर अन्त में इस महान संत ने महाप्रयाण किया। शरीर त्यागने से पहले उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर अपने इस लोक से जाने का मतलब समझाया। सुनकर सारे शिष्य बिलख-बिलखकर रोने लगे। रामानुज ने यह देखकर उनसे कहा, "तुम लोगों को अज्ञानियों के समान नहीं रोना चाहिए। मैं सदैव तुम्हारे हृदय में निवास करता हूं और तुम मेरे हृदय में रहोगे।"

फिर सब शिष्यों को उन्होंने उपदेश-रत्न-माला

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दी, जिससे उनका मोह और अज्ञान दूर होगया। अन्त में उनकी आज्ञानुसार कुशल कारीगरों ने उनकी मूर्ति तैयार की। उस मूर्ति को कावेरी में स्नान कराया गया। स्वयं उस मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करके रामानुज ने कहा, "यह हमारा दूसरा रूप है। इससे तुम लोग किसी भी प्रकार का भेद-भाव न रखना।"

यह कहकर श्रीमद्रामानुजाचार्य शक-संवत् १०५९ (ईसवी सन् ११३०) में माघ शुक्ल दशमी, शनिवार के दिन मध्याह्न में, अपने गुरु महापूर्ण के चरणों का ध्यान करके परमपद में लीन होगये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रामानुजाचार्य के वचन

रामानुज द्वारा रचित सात ग्रन्थ हैं—

१. श्रीभाष्य, २. गीता-भाष्य, ३. वेदार्थ-संग्रह, ४. वेदान्त-दीप, ५. वेदान्त-सार, ६. गद्यत्रय और ७. नित्याराधनग्रन्थ।

रामानुजाचार्य ने अपने वैष्णव शिष्यों को जो बहत्तर उपदेश दिये हैं, उन्हें महाकाव्य कहा जाता है। उनमें से कुछ चुने हुए वचन यहां दिये जाते हैं—

१. दुनिया के भोग-विलासों में डूबकर इंद्रियों के गुलाम न बनो।

२. भगवान की भक्ति में सदा मन को लगाने का प्रयत्न करो।

३. भगवान का गुणानुवाद करनेवालों पर भूलकर भी आक्षेप न करो।

४. प्रभु-भक्तों तथा महापुरुषों के सामने अपनी प्रशंसा मत करो।

५. जो वासनाओं के दास हैं और सदा विषयों के चिन्तन में लगे रहते हैं, उनका संग कभी न करो

६. पर-निंदा करनेवालों के पास कभी न बैठो।

७. ईश्वर को अर्पण किये बिना कुछ मत खाओ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

८. नित्य-प्रति नियम से कम-से-कम एक घंटा भगवत-उपासना करो।

९. जितने भी तामसी आहार हैं, उन्हें भूलकर भी न खाओ।

१०. फूल, चंदन, पान, वस्त्र, जल तथा फल आदि भगवान को अर्पण किये बिना स्वीकार न करो।

११. जो भगवान का भक्त है, वह चाहे उच्च कुल का न भी हो, तब भी उसकी निन्दा न करो।

१२. किसी भी व्यक्ति का तिरस्कार न करो।

●

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गणेशजी
९. गौतम बुद्ध
१०. सांच सुनी, हम सुनी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कछावली की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-सागम-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. गजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेन की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का बिलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पापभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी ७ भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरसम्राट
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. एरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. आनबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश धों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा ध्रुवबोल
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत नेमनाथ
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक का ३० न० पै० ४० न०पै०

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे

९२

९५

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman